International Journal of Applied Research 2020; 6(6): 235-236

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(6): 235-236
www.allresearchjournal.com
Received: 24-04-2020
Accepted: 26-05-2020

संजय जिन्दल
षोधार्थी, शिक्षा संकाय, टांटिया विष्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

डॉ. सतपाल स्वामी
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, टांटिया विष्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
संजय जिन्दल
षोधार्थी, शिक्षा संकाय, टांटिया विष्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों की व्यावसायिक अभिक्षमता एवं कार्य संतुष्टि अध्ययन

संजय जिन्दल एवं डॉ. सतपाल स्वामी

सार
आधुनिक जगत की गतिषीलता ज्ञान के विस्फोट बदलते षैक्षिक माँगों, सूचना क्रान्ति का प्रभाव, श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण की तकनीकी के उदय, बढ़ता वृत्तिकरण आदि भी शिक्षक को एक नया स्वरूप प्रदान कर रहे हैं। उक्त नई आषाओं के निमित आज के शिक्षक को परिवर्तित परिस्थितियों के परिणामस्वरूप स्वयं को न केवल विकसित करना होगा बल्कि परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल अपने कार्य कौषलों को विकसित करना होगा। अतः शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता एवं उसकी कार्य संतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना, शिक्षकों के सतत् विकास (Continuous Upgrading) की धारणा को मजबूत बनाना है। इस दिशा परक चिन्तन से यह तथ्य उभरकर आता है, कि अब समय आ गया है कि शिक्षकों के क्षेत्र को समाज की नवीन शैक्षिक मांगो के अनुकूल पुनर्गठित कर उन्हें एक सार्थक एवं आवष्यकता आधारित इकाई बनायें।

कूट शब्दः व्यावसायिक अभिक्षमता, कार्य संतुष्टि, शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, महात्मा गांधी विद्यालय

प्रस्तावना
आज व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका के सन्दर्भ में यह जानना अत्यन्त वांछनीय है कि हमारे विभिन्न विद्यालयों में नियुक्त अध्यापक, अध्यापिकाएँ इस भूमिका का सफल निर्वाह कर सकते हैं या नहीं। साथ ही यह जानना भी अत्यन्त आवष्यक है कि भावी षिक्षक अध्यापन व्यवसाय के प्रति निष्ठावान हैं या नहीं। उनमें व्यावसायिक अभिक्षमता, संवेगात्मक परिपक्वता एवं कार्य संतुष्टि की दृष्टि से उनकी क्या विषेषताएँ है? वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में इस प्रष्न का उत्तर खोजना षिक्षा में गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु अति महत्वपूर्ण है।

सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक मानवीय इकाई का कार्य लक्ष्य परक एवं उसके निमित महत्वपूर्ण होता है। अतः समस्याओं का उदय मानवीय आवष्यकताओं से होता है तथा उनके समाधान का सम्बन्ध आवष्यकता पूर्ति से होता है। इसीलिए कहा गया है कि आवष्यकता आविष्कार या खोज की जननी होती है। मनुष्य की चाहे जो क्रिया हो, लेकिन उस क्रिया का संचालन व सम्पादन आवष्यकता आधारित होता है। उक्त दार्षनिक सूत्र अक्षरषः इस शोध संकल्पना पर भी लागू होता है। यदि हम आज के परिवेष पर नजर डालें तो हमारी शिक्षक–षिक्षा एवं षिक्षा व्यवस्था को लेकर अनेक अपेक्षाएं है। विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों को देखें चाहे वो केन्दीय विद्यालय के हो, नवोदय विद्यालय के हो या महात्मा गांधी विद्यालय के हों, षिक्षकों की गिरती गरिमा को देखें, षिक्षक व्यवसाय में आये रिसावों को देखें, शैक्षिक जगत में बढ़ते भ्रष्टाचार को देखें, षिक्षक व षिक्षा के गिरते मूल्यों को देखें एवं षिक्षा जगत के बदलते स्वरूप को देखें तो एक नजर में ही समझ में आ जाता है कि आज शैक्षिक जगत व शिक्षकों के व्यवहार में अनेक विसंगतियाँ है।

आज शैक्षिक माँगों के अनुकूल षिक्षा व्यवस्था शायद परिपूर्ण नहीं दिखाई पड़ रही हैं। आज इस बात की तीक्ष्ण आवष्यकता महसूस की जा रही है कि वर्तमान षिक्षक समाज की आवष्यकताओं के अनुकूल अपना उत्पाद अर्थात् षिक्षार्थी (Out-put) दे सके। साथ ही अपने वृत्ति की अन्तर–आत्मा के अनुकूल उनका व्यवहार हो, तभी जाकर वह अपने कार्य के प्रति ईमानदार बन पाएंगे। यदि हम प्राचीन भारतीय गुरू और आज के अध्यापक को समझ के नजरिये से देखे तो यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि वर्तमान समाज में षिक्षक की अभिक्षमता एवं कार्य संतुष्टि को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। साथ ही षिक्षकों के गिरते स्तर व कार्य दबावों के चलते उनके उपलब्धि स्तरों के ग्राफ भी न्यून होते जा रहे है। अतः आज आवष्यकता एक ऐसे कार्यक्रम की है जो वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल हो, सार्थक हो तथा नवीन ज्ञान के सभी आयामों से युक्त हो।

केन्द्रीय, नवोदय एवं महात्मा गांधी विद्यालयों के षिक्षकों को भी नई तकनीकियों एवं नए ज्ञान के अनुसार अपने आप को तैयार करना है तभी जाकर वह वर्तमान समाज की आवष्यकता परक कसौटियों पर खरे उतरेंगे। इस दृष्टि से षिक्षा व षिक्षकों की कार्य विधियों का पुनः चिन्तन एवं पुनर्गठन करना होगा, तभी जाकर षिक्षक वर्तमान समाज की गतिषील आवष्यकताओं को पूरा कर पाएगा।

अध्यापक का कार्य केवल विषय विषेष का ज्ञान कराना मात्र नहीं होता क्योंकि किसी भी विषय की षिक्षा उस विषय तक सीमित नहीं होती वरन् उस विषय के माध्यम से छात्रों को जीवन के लिए अध्यापक ही तैयार करता है। आज हमारे देष में लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली है। हमें स्वस्थ, बुद्धिमान एवं चरित्रवान् नागरिकों की आवष्यकता है। कोई भी अध्यापक यदि अध्यापन के माध्यम से बच्चों का षारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास कर उन्हें सफल एवं सुयोग्य नागरिक बनाने में असमर्थ है तो हम उसे प्रभावषाली षिक्षक नहीं मान सकते। इसके लिए सबसे पहले एक सुयोग्य अध्यापक की आवष्यकता होती है। आज का अध्यापक निरंकुष शासक नहीं वह एक कलाकार है जो कोमल बच्चों के जीवन को उपयुक्त बनाता है। षिक्षक बच्चों का अभिभावक, पथ प्रदर्षक और मित्र है। उससे यह आषा की जाती है वह अपने कार्य में निष्ठा रखकर षिक्षण कार्य करे और छात्रों को सुयोग्य नागरिक बनायें, परन्तु यह उत्तरदायित्व प्रत्येक षिक्षक नहीं निभा सकता। प्रषिक्षित होने के बाद भी कोई व्यक्ति प्रभावी अध्यापक होने का दावा नहीं कर सकता। अतः षिक्षण या अध्यापन की कला में षिक्षक के पूर्ण उत्तरदायित्व की पूर्ति के लिए विषय का ज्ञान, अध्ययनषीलता एवं व्यवहार कुषलता, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का अनुभव, मृदु व्यवहार, सदाचारिता, कर्तव्यनिष्ठा व प्रभावषाली व्यक्तित्व (उत्तम स्वास्थ्य, तीव्र बुद्धि, उच्च चरित्र) आदि का होना आवष्यक है। षिक्षक एवं षिक्षिकाओं में षिक्षण प्रभावषीलता की जानकारी आवष्यक है। कई अध्ययनों से यह बात स्पष्ट होती है विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में नियुक्त अध्यापक व अध्यापिकाओं में से अधिकांष अध्यापकों में अध्यापन प्रभावषीलता नहीं है या अल्प मात्रा में ही विद्यमान है तो यह बात सिद्ध हो जायेगी कि इन विद्यालयों में नियुक्त षिक्षकों पर व्यय किया गया धन और शक्ति पूर्णतया अर्थहीन है। इस प्रकार के षिक्षक अपने कार्य में असफल ही सिद्ध होंगे और षिक्षण की सम्पूर्ण योजना को निष्प्रयोजन बना देगें। इसके विपरित यदि विद्यालयों में नियुक्त षिक्षकों के विषय में किसी अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन विद्यालयों में नियुक्त अध्यापक, अध्यापिकाएँ अध्यापन प्रभावषीलता के गुण रखते हैं तो राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित है, चाहे जिस दृष्टि से भी विचार किया जाए अध्यापकों की षिक्षण प्रभावषीलता की परख आवष्यक है।

प्रभावषीलता का दूसरा पक्ष अध्यापन अभिक्षमता भी विचारणीय है। अध्यापन एक कला भी है और विज्ञान भी। अध्यापन विज्ञान का सैद्धान्तिक एवं व्यावहाकि ज्ञान हमारे षिक्षण सिद्धान्तों, षिक्षा मनोविज्ञान, षिक्षण विधियों, मूल्यांकन प्रक्रिया आदि के द्वारा देने में सक्षम हो जाते हैं लेकिन प्रत्येक अध्यापक, अध्यापिका को अध्यापन कला का प्रषिक्षण देना षिक्षक प्रषिक्षणालयों के सामर्थ्य की बात नहीं है। इसका कारण यह है कि हर व्यक्ति में व्यावसायिक अभिक्षमता समान रूप से नहीं हो सकती। देखा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के कार्यों में भी समानता नहीं होती है। एक व्यक्ति कुछ कार्यों को अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक कुषलता एवं सरलता से कर लेता है एवं संतोष प्राप्त करता है जबकि अन्य कार्यों में वह व्यक्ति रूचि तथा संतोष प्राप्त नहीं करता है। यही कारण है व्यक्ति जिस व्यवसाय में रूचि रखता है उसमें वह प्रवीणता प्राप्त करता है क्योंकि अभिक्षमता वर्तमान की दषा है जो व्यक्ति की भविष्य की क्षमताओं की ओर संकेत करती है। अतः हम स्वतः ही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विभिन्न विद्यालयों में नियुक्त षिक्षकों की षिक्षण प्रभावषीलता की सफलता व्यावसायिक अभिक्षमता पर निर्भर करेगी। अध्यापन अभिक्षमता के प्रभाव में षिक्षण प्रभावी नहीं हो सकता। अतः यह प्रष्न अत्यन्त स्वाभाविक है कि विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में नियुक्त अध्यापक किस सीमा तक व्यावसायिक अभिक्षमता से सम्पन्न है।

कार्य संतुष्टि के कारक :–

कार्य संतुष्टि सम्बन्धी कारकों को मुख्यतः दो प्रधान वर्गों में बाँटा जाता है –

(A) वैयक्तिक कारक (Individual factors)

(B) प्रबन्धन सम्बन्धी कारक (Management factors)

(A) वैयैयक्तिक कारक (Individual factors)

इनका सम्बन्ध कर्मचारी से होता है। इसे ही कर्मचारी का शीलगुण कहते हैं। यही शीलगुण व्यक्ति के भौतिक पक्ष कार्य संतुष्टि को निश्चित करता है।

(B) प्रबन्धन सम्बन्धी कारक (Management factors)

इसके अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण पक्ष आते हैं जैसे वेतन, पदोन्नति, सहकर्मी, उत्तरदायित्व तथा सुरक्षा आदि।

इस प्रकार उक्त अध्ययन से हम यह जान पाएंगे कि आज विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के षिक्षक की व्यावसायिक अभिक्षमता क्या है ? वह अपनी वृत्ति के प्रति कितना सजग, कितना ईमानदार, कितना परिपक्व है ? साथ ही उसकी सांवेगिक परिपक्वता सामाजिक मांगों के अनुकूल है या नहीं, इस तथ्य की जानकारी होगी। यदि उसकी व्यावसायिक अभिक्षमता सामाजिक मानकों के अनुकूल नहीं पाई जाती है तो उक्त निष्कर्ष के आधार पर समाज षिक्षक की इस कमी को दूर करने का प्रयास करेगा। ऐसे कार्यक्रमों को चलाने का अवसर प्राप्त होगा, जिससे प्रभावषाली षिक्षक बन सके और जब उनका षिक्षण प्रभावषाली दिखाई देगा तो हमें समाज के नवीन मानकों के अनुकूल उन्हें और ज्यादा उच्चतर बनाने की दिषा मिलेगी।

निष्कर्षतः इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाना कि षिक्षण एक भरण पोषण का वृत्ति नहीं है, बल्कि समाज के प्रति दायित्वों से भरी वृत्ति है। समाज के मार्ग दर्षन की जिम्मेदारी षिक्षकों की है, अतः उनके सन्दर्भ में कोई भी गवेषणा महत्वहीन हो ही नहीं सकती, क्योंकि इसका सम्बन्ध षिक्षा एवं षिक्षकों से है। कहने का तात्पर्य यह है कि षिक्षा जगत के सम्बन्ध में कोई भी कार्य व्यर्थ व निष्फल नहीं होता। किसी भी राष्ट्र की षिक्षा व्यवस्था व षिक्षा की गुणवता षिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकती।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. चौहान, एस.एस. (1998). उच्च षिक्षा मनोविज्ञान विकास. नई दिल्ली : पब्लिषिंग पृ.सं. 31
2. ढोढियाल, एस. पाठक (1990). षैक्षिक अनुसंधान का विधिषास्त्र. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–51
3. कोठारी, सी.आर. (2008). अनुसंधान विधिषास्त्र विधियाँ और तकनीकी आगरा : न्यूरोज इन्टरनेषनल लिमिटेड पब्लिकेषन कारपोरेषन. पृष्ठ संख्या–2
4. खान, ए.आर. (2005). जीवन कौषल षिक्षा . अजमेरः राजस्थान माध्यमिक षिक्षा बोर्ड. पृष्ठ संख्या–14
5. गुप्त, नत्थूलाल (2000). मूल्य परक षिक्षा और समाज. नई दिल्लीः नमन प्रकाषन. पेज–122
6. जायसवाल, सीताराम (1994). षिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो मंदिर पेज 221
7. मेहता, वी.आर. (2006). उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं षिक्षा, कोटा बी.ई. प्रथम कोटा खुला विष्वविद्यालय. पृष्ठ संख्या–71
8. रेणा, विनोद.(2008). सार्वभौम षिक्षा की दिषा में उठे कदम. नई दिल्लीः मासू. प्र.मं. वर्ष–52, अंक–11, पृ.सं.7.